श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमदनंतार्यमहागुरवे नमः

श्री वेंकटेशं लक्ष्मीशं गर्भवैष्णव सेवितम्

नमामि विष्णुं देवेशं सर्वकामफलप्रदम्

श्रीश्रीनिवासगद्यं

श्रीमदखिलमहीमंडलमंडनधरणीधर
मंडलाखंडलस्य, निखिलसुरासुरवंदित वराहक्षेत्र
विभूषणस्य, शेषाचल गरुडाचल सिंहाचल
वृषभाचल नारायणाचलांजना चलादि
शिखरिमालाकुलस्य, नाथमुख
बोधनिधिवीथिगुणसाभरण सत्त्वनिधि तत्त्वनिधि
भक्तिगुणपूर्ण श्रीशैलपूर्ण गुणवशंवद
परमपुरुषकृपापूर विभ्रमदतुंगशृंग
गलद्गगनगंगासमालिंगितस्य, सीमातिग गुण
रामानुजमुनि नामांकित बहु भूमाश्रय सुरधामालय
वनरामायत वनसीमापरिवृत विशंकटतट निरंतर

विजृंभित भक्तिरस निर्झरानंतार्याहार्य
प्रस्त्रवणधारापूर विभ्रमद सलिलभरभरित
महातटाक मंडितस्य, कलिकर्दम मलमर्दन
कलितोद्यम विलसद्यम नियमादिम
मुनिगणनिषेव्यमाण प्रत्यक्षीभवन्निजसलिल
समज्जन नमज्जन निखिलपापनाशन पापनाशन
तीर्थाध्यासितस्य, मुरारिसेवक जरादिपीडित
निरार्तिजीवन निराश भूसुर वरातिसुंदर
सुरांगनारति करांगसौष्ठव कुमारताकृति
कुमारतारक समापनोदय दनूनपातक महापदामय
विहापनोदित सकलभुवन विदित
कुमारधाराभिधान तीर्थाधिष्ठितस्य, धरणितल
गतसकल हतकलिल शुभसलिल गतबहुळ
विविधमल हतिचतुर रुचिरतर विलोकनमात्र
विदळित विविध महापातक स्वामिपुष्करिणी
समेतस्य, बहुसंकट नरकावट पतदुत्कट
कलिकंकट कलुषोद्भट जनपातक विनिपातक
रुचिनाटक करहाटक कलशाहृत कमलारत
शुभमंजन जल सज्जन भरभरित निजदुरित

हतिनिरत जनसतत निरस्तनिरर्गळपेपीयमान
सलिल संभृत विशंकट कटाहतीर्थ विभूषितस्य,
एवमादिम भूरिमंजिम सर्वपातक गर्वहापक
सिन्धुडंबर हारिशंबर विविधविपुल पुण्यतीर्थनिवह
निवासस्य, श्रीमतो वेंकटाचलस्य,
शिखरशेखरमहाकल्पशाखी, खर्वीभवदति गर्वीकृत
गुरुमेर्वीशगिरि मुखोर्वीधर कुलदर्वीकर
दयितोर्वीधर शिखरोर्वी सतत सदूर्वीकृति चरणघ
नव गर्वचर्वणनिपुण तनुकिरणमसृणित
गिरिशिखर शेखरतरुनिकर तिमिरः,
वाणीपतिशर्वाणी दयितेन्द्राणिश्वर मुख
नाणीयोरसवेणी निभशुभवाणी नुतमहिमाणीय
स्तन कोणी भवदखिल भुवनभवनोदरः,
वैमानिकगुरु भूमाधिक गुण रामानुज कृतधामाकर
करधामारि दरललामाच्छकनक दामायित
निजरामालय नवकिसलयमय तोरणमालायित
वनमालाधरः, कालांबुद मालानिभ नीलालक
जालावृत बालाब्ज सलीलामल फालांकसमूलामृत
धाराद्वयावधीरण धीरललिततर विशदतर घन

घनसार मयोर्ध्वपुंड्र रेखाद्वयरुचिरः, सुविकस्वर
दळभास्वर कमलोदर गतमेदुर नवकेसर
ततिभासुर परिपिंजर कनकांबर कलितादर
ललितोदर तदालंब जंभरिपु मणिस्तंभ
गम्भीरिमदंभस्तंभ समुज्जृंभमाण पीवरोरुयुगळ
तदालंब पृथुल कदली मुकुल मदहरणजंघाल
जंघायुगलः, नव्यदल भव्यमल पीतमल शोणिम
लसन्मृदुल सत्किसलयाश्रुजलकारि बल शोणतल
पदकमल निजाश्रय बलबंदीकृत शरदिंदुमंडली
विभ्रमदादभ्र शुभ्र पुनर्भवाधिष्ठितांगुळीगाढ
निपीडित पद्मासनः, जानुतलावधि लम्ब विडंबित
वारण शुंडादंड विजृंभित नीलमणीमय
कल्पकशाखा विभ्रमदायि मृणाळलतायित
समुज्ज्वलतर कनकवलय वेल्लितैकतर
बाहुदंडयुगळः, युगपदुदित कोटि खरकर हिमकर
मंडल जाज्वल्यमान सुदर्शन पांचजन्य समुत्तुंगित
शृंगापर बाहु युगळः, अभिनवशाण समुत्तेजित
महामहा नीलखंड मदखंडन निपुण नवीन परितप्त
कार्तस्वर कवचित महनीय पृथुल सालग्राम

परंपरा गुंभित नाभिमंडल पर्यंत लंबमान
प्रालंबदीप्ति समालंबित विशाल वक्षःस्थलः,
गंगाझर तुंगाकृति भंगावळि भंगावह सौधावळि
बाधावह धारानिभ हारावळि दूराहत गेहांतर
मोहावह महिम मसृणित महातिमिरः, पिंगाकृति
भृंगार निभांगार दळांगामल निष्कासित दुष्कार्यघ
निष्कावळि दीपप्रभ नीपच्छवि तापप्रद
कनकमालिका पिशंगित सर्वांगः, नवदळित
दळवलित मृदुललित कमलतति मदविहति
चतुरतर पृथुलतर सरसतर कनकसरमय
रुचिरकंठिका कमनीयकंठः, वाताशनाधिपति
शयन कमन परिचरण रतिसमेताखिल
फणधरतति मतिकरवर कनकमय नागाभरण
परिवीताखिलांगावगमित शयनभूताहिराज
जातातिशयः, रविकोटी परिपाटी धरकोटी रवराटी
कितवीटी रसधाटी धरमणिगणकिरण विसरण
सततविधुत तिमिरमोह गार्भगेहः, अपरिमित
विविधभुवन भरिताखंड ब्रह्मांडमंडल पिचंडिलः,
आर्यधुर्यानंतार्य पवित्र खनित्रपात पात्रीकृत

निजचुबुक गतव्रणकिण विभूषण वहनसूचित
श्रितजन वत्सलतातिशयः, मड्डुडिंडिम ढमरु जर्झर
काहळी पटहावळी मृदुमद्दलादि मृदंग दुंदुभि
ढक्किकामुख हृद्य वाद्यक मधुरमंगळ नादमेदुर
नाटारभि भूपाळ बिलहरि मायामाळव गौळ
असावेरी सावेरी शुद्धसावेरी देवगांधारी धन्यासी
बेगड हिंदुस्तानी कापी तोडि नाटकुरुंजी श्रीराग
सहन अठाण सारंगी दर्बारु पंतुवराळी वराळी
कल्याणी भूरिकल्याणी यमुनाकल्याणी हुशेनी
जंझोठी कौमारी कन्नड खरहरप्रिया कलहंस
नादनामक्रिया मुखारी तोडी पुन्नागवराळी
कांभोजी भैरवी यदुकुलकांभोजी आनंदभैरवी
शंकराभरण मोहन रेगुप्ती सौराष्ट्री नीलांबरी
गुणक्रिया मेघगर्जनी हंसध्वनि शोकवराळी
मध्यमावती जेंजुरुटी सुरुटी द्विजावंती मलयांबरी
कापिपरशु धनासिरी देशिकतोडी आहिरी
वसंतगौळी पंतु पाक् केदारगौळ कनकांगी
रत्नांगी गानमूर्ती वनस्पती वाचस्पती दानवती
मानरूपी सेनापती हनुमत्तोडी धेनुका नाटकप्रिया

कोकिलप्रिया रूपवती गायकप्रिया वकुळाभरणं
चक्रवाकं सूर्यकांतं हाटकांबरी झंकारध्वनी
नटभैरवी कीरवाणी हरिकांभोदी धीरशंकराभरण
नागानंदिनी यागप्रियादि विसृमर सरस
गानरसेत्यादि संतत संतन्यमान नित्योत्सव
पक्षोत्सव मासोत्सव संवत्सरोत्सवादि विविधोत्सव
कृतानंद श्रीमदानंदनिलय विमानवासः, सतत
ततपद्मालया पदपद्मरेणु संचितवक्षस्तट पटवासाः
(श्रिमदहोबिल लक्ष्मीनृसिंहाराधनेन संप्राप्त
पद्मावती परिणय महोत्सवः) श्रीश्रीनिवासः
सुप्रसन्नो विजयतां. श्रीमदलर्मेल्मंगा
नायिकासमेतः श्रीश्रीनिवास स्वामी सुप्रीतः
सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, पवन पाटली पालाश बिल्व
पुन्नाग चूत कदळी चंदन चंपक मंजुळ मंदार
हिंजुलादि तिलक मातुलुंग नारिकेळ क्रौंचाशोक
माधूकामलक हिंदुक नागकेतक पूर्णकुंद पूर्णगंध
रस कंद वन वंजुळ खर्जूर साल कोविदार हिंताल
पनस विकट वैकसवरुण तरुघमरण
विचुळंकाश्वत्थ यक्ष वसुध वर्माध मन्त्रिणी

तिन्त्रिणी बोध न्यग्रोध घटवटल जंबूमतल्ली
वीरतचुल्ली वसती वासती जीवनी पोषणी प्रमुख
निखिल संदोह तमाल माला महित विराजमान
चषक मयूर हंस भारद्वाज कोकिल चक्रवाक
कपोत गरुड नारायण नानाविध पक्षिजाति समूह
ब्रह्म क्षत्रिय वैश्य शूद्र नानाजात्युद्भव देवता
निर्माण माणिक्य वज्र वैढूर्य गोमेधिक पुष्यराग
पद्मरागेंद्रनील प्रवाळमौक्तिक स्फटिक हेम
रत्नखचित धगद्धगायमान रथगज तुरग पदाति
सेना समूह भेरी मद्दळ मुरवक झल्लरी शंख काहळ
नृत्यगीत ताळवाद्य कुंभवाद्य पंचमुखवाद्य
अहमीमार्गन्नटीवाद्य किटिकुंतलवाद्य
सुरटीचौंडोवाद्य तिमिलकविताळवाद्य,
तक्कराग्रवाद्य घंटाताडन ब्रह्मताळ समताळ
कोट्टरीताळ ढक्करीताळ एक्काळ धारावाद्य पटह
कांस्यवाद्य भरतनाट्यालंकार किन्नर किंपुरुष रुद्रवीणा
मुखवीणा वायुवीणा तुंबुरुवीणा गांधर्ववीणा
नारदवीणा स्वरमंडल रावणहस्त
वीणास्तक्रियालंक्रियालंकृतानेकविधवाद्य

वापीकूपतटाकादि गंगायमुना रेवावरुणा
शोणनदीशोभनदी सुवर्णमुखी वेगवती वेत्रवती
क्षीरनदी बाहुनदी गरुडनदी कावेरी ताम्रपर्णी प्रमुखाः
महापुण्यनद्यः सजलतीर्थैः सहोभयकूलंगत सदाप्रवाह
ऋग्यजुस्सामाथर्वण वेदशास्त्रेतिहास पुराण
सकलविद्याघोष भानुकोटिप्रकाश चंद्रकोटि समान
नित्यकल्याण परंपरोत्तरोत्तराभिवृद्धि र्भूयादिति भवंतो
महांतोSनुगृह्णंतु, ब्रह्मण्यो राजा धार्मिकोSस्तु, देशोयं
निरुपद्रवोSस्तु, सर्वे साधुजनास्सुखिनो विलसंतु,
समस्तसन्मंगळानि संतु, उत्तरोत्तराभिवृद्धिरस्तु ,
सकलकल्याण समृद्धिरस्तु.

(इति श्रीश्रीनिवासगद्यं श्रीशैल श्रीरंगाचार्यै रचितं संपूर्णम् शुभमस्तु.)

This gadyam was composed by Sriman Srishaila Srirangacharyar. This has been published by Tirupati SriVenkateswara Oriental Research Institute in their book "SriVenkateswara kavya kalaapa:" on page 324 in the year 1940. The last part of this gadyam starting with the ragas and closing with the mangalam are not found in the original source. The TTD vedaparayana karta Sri P.V.Ananthasayanam Ayyangar included it for recital.

मंडयं नायक रामानुज